नशा - युवा पीढी का अभिशाप

आधुनिक समाज में आज नशा का प्रयोग बहुत ही बढती हो रही है। पहले भी इसका प्रयोग होता था, लेकिन बहुत ही कम मात्रा में। प्रायः मजदूर, किसान या अशिक्षित लोग इसका प्रयोग करते थे। लेकिन आज इसका प्रयोग उच्चे-धनी तथा स्कूल और पढे-लिखे सभी लोगों में देखने आ रही है। पहले नशा प्रयोग करने लोगों को हेय दृष्टी से माना जाता था, अतः जो व्यक्ती इसका प्रयोग करते थे उसके समाज में अच्छा नहीं समझा जाता था। लेकिन इनका प्रयोग करने वालों को हेय दृष्टि से नहीं देखती। यह ही इसका प्रयोग की बढोतरी की कारण।

बहुत ही चिंतित और दुःख की बात यह है कि आज इसका प्रयोग स्कूल और कॉलेजों में पढनेवाले नव युवकों में बहुत ही ज्यादा से देखा जा रहा है। इस नशीलों का प्रयोग मन और शारीरिक रूप से प्रभावित करती है। इसका प्रयोग सबको तन मन और धन से शून्य करते हैं। आज नशा से शराब, गांजा, अफीन, हेरोइन आदि का प्रयोग बढती आ रही है। इन चीजों के प्रयोग से

इसका प्रयोग करने वालों में विक्षिप्तता और भ्रम पैदा होती है। जो व्यक्ति नशा के आदी बन जाती है, यदि इस व्यक्ति को इसको ना मिलते तो वह विभ्रम होकर छटपटाने लगता है। इसका कारण यह है कि नशीली दवाओं का प्रयोग से असके मन दुर्बल होती है। सच्च में इस नशीली दवाएँ का प्रयोग है होती है। सच्च में इस नशीली दवाएँ का प्रयोग है सब तरह की बुराई की पहली दरवाजा। व्यस्क, वृद्ध, प्रौढ़ सब इसको आदी होती है लेकिन आज के समाज मे इसका उपयोग कॉलेज में पढनेवाली लड़की-लड़कियाओं में और होस्टल में रहनेवाले नवयुवकों में भी इसका हो जाती है। इसका प्रयोग से नवयुवकों का व्यक्तित्व छोटा होता है। इसका प्रयोग समाज भी नाश होता है अर्थात, देश की उन्नती नहीं होती है। इसका तस्करी में एक बडा सूत्र है क्योंकि इस नशीलि दवाएँ, का बेचनेवालों और इसका उपयोग करने वालों एक दूसरे बात करने समय सुननेवालों को न समझने के लिए इस दवाइयों को कोड नामें डालता है। इसका तस्करी सचमुच बहुत लाभदायक ही है क्योंकि हर दिन की समाचार पत्र हमें देख सकते कि इस नशीली दवाएँ प्रयोग और बेचनेवालो का पोलीस गिरफ्तार किया इन चीजों का कीमत करोडों था। इसका चंगुल में

फंस गया तो फिर उस व्यक्ति को सभी चीजों जैसे धन-मन सब बरबाद करने के बाद ही पकड़ा सकती है। पाश्चात्य देशों के यह आदत हमारे देशों में भी बढ़ती होती है। इसका कीमत बढ़ी है। नव जवानों इसका इस्तेमाल कुछ क्षण की सुःख के लिए करती है बल्कि; इससे भाँती-भाँती से रोग आ रहे है। कानसर जैसे जीन लेवा रोगों के चंगुल में फंस गए है। फिर क्यों? नशीली दवाएँ का प्रयोग से हमारे स्वास्थ्य ख़राब होती है। मज़ा की बात है क्योंकि, हमारे भारत में भी इसका प्रयोग नारियों में बढ़ती हो रही है; इससे भी बड़ी-बड़ी नुकसान हो रही है। नारियों में इसका प्रयोग करने नवजात शिशू विकलांग बनते है और उस बच्चे इस धरती पर आने समय ही उसको कैंसर जैसे रोगों को शिकार बनते है।

इसका प्रयोग से केवल मनुष्य को ही नहीं, पाल्तू जानवर को बड़ी बड़ी जीन लेवा के रोग आते है। क्योंकि घरवालों की धूम्रपान के उपलब्द से उस जानवरों को मिलती वायू भी विषांश भरा वायू है ऑक्सिजन के बदले कार्बण मोणोक्सैड उसके खून में आते हैं और शारीरिक क्षमता कम हो जाता है। इसका बहुत सी इस्तेमाल से हमें बहुत बड़ी कीमत देना पड़ता है। आज पिछले वर्ष के अनुमान था कि, कैरल के तिरुवानन्तपुरम जी जिले में स्थित हो आर. सि. सि (रीजियनल कैनसर सेंटर) हम सब को परिजित है, इसमें रहती कैन्सर पड़ती रोगों

एक निर्देई आग लोगों भी इस नशीली दवाएँ का आदी थे। नशीली दवाएँ का आदी बन जाते लोग सब क्षेत्र में असफ होते है और इस दवाएँ के बिना वे शारीरिक व मानसीक रूप से असामान्य बन जाता है। आज की नव युवगों अपनी समय को सदुपयोग न करके, अपने दायित्व को पूरा नहीं करते इस सामने बैठती है। नशीलि दवाएँ का प्रयोग से उस व्यक्ति का मन- और बुद्धी दोनों से नियंत्रण खो जाता है और आम या अच्छी जन के समने एक जोकर के शक्ल बनते हैं।

मानव जीवन का एक-एक क्षण अमूल्य है आज का नव पीढी इसको सदुपयोग न करके नशीलि दवाएँ का शिकार बन जाती है और सफलता का मूलमंत्र समय का सदुपयोग ही है अर्थात लोगों नशीली दवाएँ उपयोग करके अपनी अनमोल नष्ठ की है और असफलता का मित्र बन जाती है। पहले इन छोटे बच्चों में नशीली दवाएँ का इस्तेमाल अपने दोस्तों के साथ एक मज़ा के लिए हो रहा है, फिर, इसका उपयोग करते करते उन्होंने इसका बडा शिकार हो जाती है। इस नशीलि दवाएँ का प्रयोग करने इस लोग इसमें नशा होकर अपने परिवार के प्रति होने प्रतिबद्धता को छोडकर सारे समय मोबाईल कम्प्यूटर तथा सजार माध्यमों के सामने बैठती है। सचमुच में इस सोशल मीडिया सकारात्मक या विकसात्मक भूमिका अदा करते है। लेकिन नशीली दवाएँ का शिकार हुए जैसे लोग इसको गलती से उपयोग

करती है और समाज में सँवर ~~अपराध~~ अपराध कारय जैसे बाते करते लोगों में भ्रम पैदा करती है।

यह बिलकुल ठीक है कि नशीली दवाएँ का प्रयोग करने की अर्थ अपने अनमोल जीवन को समय से पहली ही मरने को छोडती है। इस सत्य को हमारे केरला के मशाहूर व्यक्ति श्री. नारायण गुरु इस प्रकार कहा कि "शराब जहर है, उसको न खरीदें, न पिए और न बेचें"।

आज के समाज में धूम्रपान, तंबाकू, शराब जैसे की प्रयोग बहुत व्यापग हो रही है। हमारे देशों के प्रति ~~हमको कई~~ दायित्व है ~~न~~, क्योंकि इस देश की उन्नती ~~है~~ में हमारे उत्तर-दायित्व बडी है और इसके साकार करने को हमारे कर्तव्य ही है। ~~अर्थात~~ ~~हम~~ अर्थात हमको इस नशीली दवाएँ का प्रयोग ~~न~~ छोडकर ~~हमको~~ हमें हमारे राष्ट्र के उन्नती के लिए प्रयत्न करना चाहिए, यही है राष्ट्र भक्ती। हमको हमारे उत्तरदायित्वों के सामने बडी ईमानदारी होने चाहिए। केवल सेना में भर्ती हो जाँए और अपने राष्ट्र के लिए अपना जीवन बलीदान करने ही राष्ट्र भक्ती ~~न~~ नहीं बल्की अच्छे रास्ते में नशीली दवाएँ पूर्ण रूप से छोडकर अपनी दायित्व को सच्च और ईमानदारी से करना चाहिए। यह भी हमारे देश के प्रति सेवा है, भक्ती है। अच्छे रीती रिवाज़ में चलने वाली लोगों को सदा ~~खुश~~ खुशी ही पडती है। अपने आपको इस ~~ध~~ धरती बदुधीशाली जीव में कह जाती इस

मनुष्य अनजाने या जान बूझकर इस नशीली दवाएँ का शिकार हो जाति हैं। जब नव पीढी में नशीली दवाओं का प्रयोग होता है तब उनकी पतन होती जा रही है। जो व्यक्ति इस नशीली दवाएँ का चगुंल में फंस हो जाता है उस व्यक्ति स्वयं ही नष्ट होता है। वे अन्य लोगों को अक्रम करती हैं। आज नशीली दवाएँ के प्रयोग विद्यार्थी में बहुत व्यापक में देख सकती है। एक विद्यार्थी का कर्तव्य विद्या को अर्जन करना है, बल्की इस नशीली दवाओं शिकार हो जाती बालकों में अपने पढायी में रुची कम होती है और सदा इसके पीछे चल रही है। इस नशीली दवाएँ सोशल मीडिया जैसे है क्योंकि इसको जितना लाभ है उतना ही नष्ठ होती है। आजकल भारत में इसका प्रयोग व्यापक से देखती आ रही है, यह भी बहुत चिंता और दुःख की बात है। भारत अपनी सस्कृति और परंपरा के लिए प्रसिद्ध देश है पर इस नशीली दवाएँ के इस्तेमाल से यहाँ की परंपरा की पतन होती है। नशीलि दवाएँ में हुई युवकों नारियों के सामने छेडछाड़ करते हैं और उसे अक्रम करते है। यह सभी हमारे देश के प्रति होने वाली कलंक है। इस नशीली दवाएँ से हुई प्रशनों का लिस्ट लंबी हो रही है।

केवल भारत ही नहीं बल्की इसके बाहर के देशों में भी इसका प्रश्न बडती आ रही है।

कई देशों में इसके रोकने के लिए कई कानूनों हो रहे हैं। कुछ देशों में इसके खिलाफ कठोर दंड भी होती हैं। किसी देशों में नशीली दवाएँ का दुरुपयोग के खिलाफ मृत्यु दंड भी हो रहा है। एक विद्यार्थी के स्तर पर भी हमको इसके खिलाफ बहुत करना पड़ती है। इसका उपयोग करने वालों का जानकारी अपनी स्कूल की अध्यापक या पोलीस स्टेशन में देना चाहिए। क्योंकि कभी इससे एक परिवार को बचाने पड़ता है। मानव का मनोवृत्ति का निर्माण शिक्षा प्रणाली होती है। तो इस दुर्भावना के नतीजा संबन्ध दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली होती। इसलिए इस व्यक्ति को बुरी आदत स्कूल से सुलझाने पड़ता है। पर एक प्रश्न है कि इस नशीली वस्तुओं का प्रयोग एक सामाजिक मुद्दा है। इसको किसी कानून और दण्ड से सुलझाना नहीं सकती है। इसको सुलझाने के लिए हर शख्स कमर कसकर निकलना पड़ना चाहिए। इस नशीली दवाएँ का तस्करी एक लाभदायक धन्धा हो चुकी है। इसको सबसे पहले सुलझाना चाहिए। इसको सुलझाने के लिए हमको सबको एकसाथ होकर इसको खिलाफ रवैया करना चाहिए।